हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

हाँ		नहीं	✓

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): VII (5/3/19)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ankit

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।

तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।।

वृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।

पवन पानि धनसार सँजीवनि दधिसुत किरन भानु भइ भुंजैं।।

ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजैं।

सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त काव्यांश सूरदास कृत तथा आ. शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि बेद लोक-लाज, आँकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है।
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रासनाम लेतु है।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त काव्यांश गोस्वामी तुलसीदास कृत कवितावली से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) पाइ महावरू दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।

फिरि फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ।।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ जायसी कृत पद्मावत के नागमती-वियोग खण्ड से उद्धृत हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

संदर्भ-प्रसंग – उपरोक्त काव्यांश आधुनिक काल के कवि मैथिली-शरण गुप्त (राष्ट्रकवि) के भारत-भारती से उद्धृत हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीतसार सूरदास कृत तथा आचार्य ~~[illegible]~~ रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित है। 'भ्रमरगीत' परंपरा में सूरदास का भ्रमरगीत सर्वोच्चता पर है। इसमें मुख्यतः उद्धव तथा गोपियों के बीच के संवाद का वर्णन है।

ऊधो ज्ञान मार्ग तथा निर्गुण मत के समर्थक हैं तथा गोपियाँ भक्ति मार्ग व सगुण मत की समर्थक हैं। गोपियों तथा ऊधो के बीच का संपूर्ण संवाद स्पष्ट रूप से निर्गुण-सगुण के विवाद पर आधारित है। ऊधो वृंदावन पहुँचने पर गोपियों से ज्ञान की बातें करते हैं तथा उन्हें अपना ध्यान प्रेम व भक्ति से हटाकर ज्ञानार्जन की ओर उन्मुख करने के लिए प्रेरित ~~करती~~ करते हैं। इस पर गोपियाँ उनका मजाक उड़ाती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं, और उन्हें विदूषक के समान समझती हैं।

ऊधो ज्ञानमार्गी हैं, अतः आसानी से पराजित होने वालों में से नहीं हैं। वे एक के बाद दूसरा करते हुए अनेक तर्क देकर गोपियों को ज्ञानमार्ग तथा निर्गुण भक्ति की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न करते हैं। परंतु वह सफल नहीं हो पाते हैं।

ऊधो के तर्कों के जवाब में गोपियों के 'मासूमियत' भरे प्रश्न ऊधो को विचलित भी कर देते हैं। गोपियों के कुछ प्रश्न जैसे निर्गुण की जननी कौन है, दास कौन है आदि ऊधो को परेशान करते हैं

" को है जनाने "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाद में तो गोपियाँ यहाँ तक कहती हैं कि उनके पास एक ही हृदय है जिसमें कि श्याम बसे हुए हैं और अब उसमें निर्गुण के लिए जगह नहीं है

१८ ऊधो मन न भयो दस बीस :

ऊधो के तर्कों के जवाब में गोपियाँ यहाँ तक कहती हैं कि कृष्ण उनके हृदय में ऐसे बसे हुए हैं जैसे कि कोई तिरछा 'शूल' हृदय में घुस गया हो जिसे निकालना मुश्किल हो।

गोपियों के बातों से ऊधो न सिर्फ बिचलित होते हैं बल्कि निर्गुण को लेकर उनके मन में संशय भी उत्पन्न होता है और अंतत: वह कहते भी हैं कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"अति अधीर भयो मन मोरे।"

'भ्रमरगीतसार' में संपूर्ण गोपी-ऊधो संवाद से ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे ऊधो पर गोपियों की विजय हुई हो।

अतः 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण पर सगुण की विजय का काव्य माना जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत-भारती ऐसे समय में लिखी गई जब संपूर्ण देश औपनिवेशिक सत्ता के अधीन था। ब्रिटिश शासन ने भारतीय जनमानस को न सिर्फ बाहरी और भौतिक स्तर पर अपने अधीन कर लिया था बल्कि मानसिक स्तर पर भी गुलाम बना लिया था। राष्ट्रवासियों का आत्मविश्वास निम्नतम स्तर पर था। ब्रिटिश साम्राज्यवादी लेखकों तथा विचारकों ने भी इसी मत का प्रतिपादन किया कि भारतीय हमेशा से गुलाम रहे हैं, उनमें स्वशासन कि योग्यता नहीं है आदि-2।

ऐसे में 1912 में मैथिली-शरण गुप्त जी की 'भारत-भारती' ने लोगों में आत्मविश्वास का संचार किया तथा उन्हें उनके अतीत के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सकारात्मक पहलुओं से परिचित करवाया।

भारत-भारत के गुप्तजी नें तीन खण्डों — भूतखण्ड, वर्तमान काल तथा भविष्यत में विभाजित किया और इन तीन खण्डों में भारत और भारत-वासियों की स्थिति को 'कालचक्र' के माध्यम से समझाया।

भूतकाल में भारत की उपलब्धियों यथा - विज्ञान, धर्म, दर्शन, नैतिकता आदि पर सविस्तार चर्चा की गई है। संपूर्ण रचना का सबसे ज्यादा भाग भूतकाल के वर्णन को ही समर्पित है जिसमें इतिहास के अभीगीता-वादी दृष्टि स्पष्ट है।

इतिहास की उपयोगितावादी दृष्टि के बावजूद भी अपने रचना-काल के हिसाब से भारत-भारती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इसने लोगों में पुनः आत्मविश्वास का संचार किया तथा उन्हें उनके अतीत के गौरव से परिचित करवाया।

भारत-भारती ने देश को ~~एक में पिरो~~ भौगोलिक इकाई के रूप में मान्यता को मजबूती प्रदान की। भारत-भारती की लोकप्रियता दक्षिण-भारत में भी बहुत थी।

अतः संपूर्णता में देखने पर यह कहना ही उचित होगा की भारत-भारती मूलतः एक 'नव-जागरण' का काव्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते हैं। क्या निराला की यह विशेषता राम की शक्तिपूजा में भी दृष्टिगत होती है? विवेचन करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"राम की शक्तिपूजा" ~~1936~~ 1935-36 की कविता है। यह वह दौर था जब भारतीय स्वाधीनता का संघर्ष अंतिम चरण के दौर से गुजर रहा था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में दो मुख्य अहिंसक आंदोलन — 1919 का खिलाफत आंदोलन और 1929 का सविनय अवज्ञा आंदोलन, भी भारत को आजादी नहीं दिला सके थे। प्रथम विश्व-युद्ध (1914-18) के उपरांत अंग्रेजों ने भारत को स्वाधीनता देने की दिशा में कोई कदम नहीं बढ़ाया अपितु जाति व धर्म के आधार पर देश में विभाजन और भी बढ़ाने की कोशिश करने लगे।

अहिंसक आंदोलन की असफलता के बीच-2 में हिंसक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ भी चल रही थी तथा इनके बलिदान आम जनमानस में विद्रोह की भावना को प्रखर कर रहे थे।

ऐसे समय में निराला 'राम की शक्ति पूजा' की रचना करते हैं और संदेश देते हैं कि " शक्ति की करो मौलिक कल्पना " इस संपूर्ण कविता में ऐसा प्रतीत होता है कि निराला महात्मा गांधी को संदेश दे रहे हों। कविता में महात्मा गांधी 'राम' के रूप में तथा ब्रिटिश साम्राज्य 'रावण' के रूप में व्यक्त हुए हैं।

निराला कहते हैं कि नैतिकता अच्छी बात है, परंतु दुष्ट के आतंक को खत्म करने के लिए यदि ~~[illegible]~~ मार्ग बदला पड़े तो उचित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। यहाँ वो महात्मा गांधी को अहिंसा का मार्ग अपनाकर हिंसक आंदोलन की ओर उन्मुख होने की बात करते हैं।

वे यहाँ तक कहते हैं कि यदि अनैतिक अंग्रेज शक्ति के बल पर इतने सफल हो सकते हैं तो फिर गाँधीजी तो नैतिकता की मूर्ति हैं। यदि वो शक्ति का प्रयोग करेंगे तो अवश्य ही सफल होंगे।

अतः यह कहना उचित ही प्रतीत होता है कि निराला अपने काव्य की आवश्यकतानुसार प्रसंगों का चयन, प्रसंगों का विस्तार तथा प्रसंग की प्रारम्भ करने वाले अति सक्षम कवि हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) स्वारथ को साज न समाज परमारथ को,

मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है।

कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,

लिखी न बिरंचि हू भलाई भूलि भाल है।

रावरी सपथ, राम! नाम ही की गति मेरे,

इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है।

तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपालु!

कीजै न बिलंब, बलि, पानी भरी खाल है।।

संदर्भ-प्रसंग – उपरोक्त काव्यांश तुलसीदास कृत कवितावली से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।

पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम।।

संधि-प्रसंग → उपरोक्त दोहा भक्तिकालीन संत कवि कबीर दास जी द्वारा रचित है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमम किय लोचन-जगत।।

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास कृत कवितावली से उद्धृत हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सँदेसनि मधुबन-कूप भरे।
जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।
कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?
अपने नहिं पठवत नँदनंदन हमरेउ फेरि धरे।।
मसि खूँटी कागर जल भींजे, सर दव लागि जरे।
पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक-कपाट अरे?

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त पंक्तियाँ सूरदास कृत तथा आ० शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीतसार से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग — उपरोक्त पंक्तियाँ रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुरुक्षेत्र नामक खण्ड काव्य से उद्धृत हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' – इस पंक्ति के संदर्भ में 'राम की शक्तिपूजा' की संवेदना पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम-कि शक्तिपूजा' महाप्राण निराला की अद्भुत कविता है। ~~निराला~~ निराला का व्यक्तित्व और उनका महाप्राणत्व इनकी कविता में बिल्कुल स्पष्ट होते हैं।

निराला का व्यक्तिगत जीवन बहुत कष्टों में बीता था। आर्थिक चुनौतियों में जीवन कर पीछा किया। विवाह के कुछ समय पश्चात ही पत्नी का निधन हो गया था। आर्थिक कष्टों की वजह से पुत्री 'सरोज' का इलाज भी ठीक से नहीं हो पाया और वह की मृत्यु हो गई।

निराला की कविताओं को भी उनके समय में बहुत सम्मान नहीं मिला पाया। कई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बार प्रकाशकों नें कविताओं को वापस भेजा, समीक्षकों ने काव्य-कर्म की नकारात्मक समीक्षा की तथा काव्य-कर्म में निराला की मौलिकता और नए-नए प्रयोगों को हेय दृष्टि से देखा गया।

परंतु निराला यूंहि 'महाप्राण' निराला नहीं हैं। तमाम कष्टों और चुनौतियों के बावजूद वो संघर्ष करते ही रहते हैं। उनकी यही संघर्षशीलता 'राम की शक्तिपूजा' में भी दृष्टिगोचर होती है।

'राम-कि-शक्तिपूजा' के राम भी संघर्षों से गुजर रहे हैं। उनकी प्रिय पत्नी का रावण नें हरण कर लिया है। राम नें युद्ध का शंखनाद कर दिया तो रावण के रक्षार्थ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वयं देवी दुर्गा आ गई / जामवंत के परामर्श पर राम नें देवी को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान किया तो अंतिम 'इंदीवर' कम पड़ गया।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सबकुछ उनके विपरीत ही हो रहा हो। परंतु राम को तभी याद आता है कि उनकी माता उनके सुंदर नेत्रों की वजह से उन्हें 'राजीव नयन' कहा करती थी। यह याद आते ही राम इंदीवर की जगह पर अपने नेत्र देवी को समर्पित करने के लिए राजी हो जाते हैं और बाण उठा लेते हैं।

यही वह बिंदु है जहाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम और निराला एक ही प्रतीत होते हैं।

राम भी विपरीत परिस्थितियों के समक्ष झुकते नहीं हैं और निराला भी नहीं।

कविता की यह पंक्ति – 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' में यदि 'वह एक और मन रहा निराला का जो न थका' कह दिया जाए तो यह सर्वथा उचित ही प्रतीत होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'भावों का उत्कृष्ट और उदात्त स्वरूप बिहारी में नहीं मिलता। उनकी कविता शृंगारी है पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे रह जाती है।' इस मत के संदर्भ में बिहारी के काव्य का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकालीन कवि हैं और उनके काव्य में सामान्यतः रीतिकालीन कविता के लक्षण मौजूद हैं।

यह वह काल था जब मुगल साम्राज्य का अधिपत्य लगभग पूरे भारत के भूभाग पर था तथा एक केंद्रीय सत्ता होने की वजह से युद्ध सामान्यतः नहीं होते थे। ऐसे में तत्कालीन कविता में शृंगारिकता के तत्व ही अधिकतम में हैं।

सामंती व्यवस्था में महिला को उपभोग की वस्तु मानने की वजह से शृंगार में भी संयोग शृंगार ही अधिकता में है न कि वियोग शृंगार।

बिहारी की कविता में भी यही लक्षण मिलते हैं। बिहारी की कविता प्रेम के कई रूप दिखाने की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कोशिश करती है पर संभोग शृंगार के अतिरिक्त कहीं पर भी ऐसा नहीं प्रतीत होता है कवि की कामनाएं शब्दों का रूप ले रही हों।

बिहारी शब्दों से चमत्कार पैदा करते हैं, उनकी सामाहार क्षमता अद्भुत है और वे एक ही दोहे में कई-कई वाक्य कहते हैं-

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सो बात॥"

परंतु जब बिहारी इसके अतिरिक्त कोई वर्णन करते हैं तो उसमें प्रेम का बनावटी रूप दिखाई देता है। उनका वियोग श्रृंगार भी बनावटी है।

"इत आवत चलि जात उत,
चली छ सातक हाथ"

बिहारी नागर हैं और उनके प्रेम वर्णन में की यह स्पष्ट होता

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

है। उन्हें प्रेम व्यक्ति के व्यक्तित्व से कम और उसके 'शहर' या 'गाँव' के निवासी होने से ज्यादा है।

अतः यह कहना बिल्कुल भी अनुचित नहीं होगा कि भावों का उदात्त स्वरूप विहारी में नहीं मिलता तथा उनकी कविता प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँच पाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय रचना है'- इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this

नागमती का विरह वर्णन हिंदी साहित्य के अद्वितीय उपलब्धि है। नागमती का विरह आशिक-माशूकाओं का अश्लील प्रलाप न होकर एक गृहणी की विरह वेदना है।

नागमती यद्यपि चित्तौड़ की महारानी है, तथापि विरह में वह जिस तरह से भावों के उदात्त स्तर को छूती है, वह अद्भुत है।

नागमती विरह में इतनी व्याकुल है कि पशु पक्षियों से भी बात करने लगती है और उनसे अपेक्षा करती है कि वे उसका संदेश उसके पति तक पहुँचा दें।
"पिउ सौं कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा हे काग।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ जायसी कालिदास के समान प्रतीत होते हैं जिनकी मेघदूतम में बादल संदेशवाहक का काम करते हैं।

नागमती बारहमासा वर्णन के माध्यम से हर मौसम के अनुसार अपनी वेदना व्यक्त करती है।

विरह का स्तर और प्रेम की उच्चता का अनुमान इस बात से भी लगता है कि नागमती हवाओं से कहती है कि वे उसकी राख को उस रास्ते पर फैला दें जिसपर से चलकर उसका पति आने वाला है।

यहाँ पर जायसी आधुनिक काल कि कविता 'पुष्प की अभिलाषा' के कवि प्रतीत होते हैं जहाँ पुष्प भी इसी प्रकार रास्ते पर फैलकर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जाने की इच्छा व्यक्त करते हैं।

नागमती का विरह वर्णन जिस तरह से भावों के उच्च स्तर को छूता है वह किसी एक व्यक्ति या एक काल की न होकर हर काल के हर विरह वियोगी की गाथा है।

अतैव नागमती के विरह-वर्णन को हिंदी साहित्य की अद्वितीय रचना कहना उचित ही है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'असाध्य वीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय कृत 'असाध्यवीणा' एक ऐसे समय की रचना है जब मनुष्य के समक्ष की वास्तविक चुनौतियों का निर्धारण कठिन था।

जयशंकर प्रसाद के समय की चुनौती 'अति आधुनिकता - अति वैज्ञानिकता' थी जिसे उन्होंने 'कामायनी' के माध्यम से सुलझाया।

निराला के समय की चुनौती स्वतंत्रता आंदोलन और उसके स्वरूप निर्धारण की थी जिसे उन्होंने 'राम की शक्तिपूजा' के माध्यम से सुलझाया।

अज्ञेय के समय ऐसी कोई चुनौती नहीं थी अतः विषय का चयन कठिन था। परंतु 'असाध्यवीणा' भी एक समय विशेष की चुनौती और उसके समाधान की कोशिश

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

करती है। "असाधमवीणा" इस बात का संदेश प्रसारित करती है कि मानव को अपना सहज कर्म ही करना चाहिए और उसे अपनी विशेषता मानने के बजाए प्रकृति की अभिव्यक्ति समझना चाहिए।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।" उदाहरण सहित मीमांसा कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"भ्रमरगीत" में ऊधो और गोपियों के बीच का संवाद तथा सगुण मार्गी गोपियों के भावों का उद्घाटन अत्यंत मनोहर है।

ऊधो गोपियों से ज्ञान की बातें करते हैं और अपने बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक तर्क देते हैं। परंतु गोपियों को तर्क से अधिक सरोकार नहीं है क्योंकि उनके मन में प्रेम रूपी सुंदर भाव भरा पड़ा है।

सभी भावों की अधिकता की वजह से गोपियाँ जब कुछ बोलती हैं तो वह सीधे-2 नहीं रह जाता अपितु उसमें वक्रता आ जाती है जिसका उद्गम स्रोत उनके मन के भावों में है।

स्थिति तो यहाँ तक पहुँच गई है कि जब ऊधो गोपियों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

कृष्ण से ध्यान हटाकर 'ज्ञान' में लगाने को कहते हैं तो गोपियाँ कहती हैं कि,

"ऊधो मन न भयो दस-बीस"

इस तरह की भाव प्रेरित बातें किसी भी तार्किक व्यक्ति को असहज कर में डाल सकती हैं, और ऐसा ही ऊधो के साथ भी होता है।

गोपियाँ तो यहाँ तक कहती हैं कि कृष्ण उनके मन में तिरछे इस तरह से पैठ हुए हैं कि ऐसे निकालना असंभव है।

गोपियों की बातों से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी बातों में कोई विशेष तार्किकता नहीं है। परंतु, उनके बातों की उत्पत्ति तर्क से नहीं प्रेम की वजह से है। प्रेम-जनित तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेम चलित यह बातें अत्यंत मनोहर बन पड़ी हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता के मूल मंतव्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

'हरिजन गाथा' 1970 के दशक के अंत में लिखी गई कविता है। आजादी के लगभग 30 साल बीतने के बाद भी किसी तरह भारतीय लोकतंत्र गरीबों और दलितों के लिए निरर्थक ही साबित हुई, इसकी बानगी प्रस्तुत करने वाली कविता है 'हरिजनगाथा'

इस कविता के रचनाकाल के कुछ पूर्व ही बिहार के समस्त बेलछी नामक स्थान पर दलित वर्गों के लोगों को जिंदा जला दिया गया था। इस कविता में भी मूल मंतव्य कुछ यही है।

कविता के शुरुआत से अंत तक एक शृंखला सी बनती नजर आती है, जो कि आजादी से लेकर आज तक के दलित आंदोलन और उसके स्वरूप को दर्शाती है।

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता में शुरुआत में कुछ दबंगों ने दलित परिवारों को जिंदा जला दिया, फिर एक शिशु का जन्म और अंत में दलितों में विद्रोह और आंदोलन का स्वर नजर आता है।

इस स्वरूप में यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी किसी और समय में भी।

आज भी दलितों की दशा कुछ विशेष नहीं सुधरी है। भारतीय लोकतंत्र में यद्यपि संवैधानिक तौर पर इन्हें समानता का अधिकार तथा अन्य कई अधिकार दिए गए हैं पर धरातल पर स्थिति कुछ अलग ही नजर आती है।

दलित उत्पीड़न, विवाह आदि अवसरों पर घोड़े पर चढ़ने पर दलितों की सवर्णों द्वारा पिटाई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आदि रोजमर्रा की खबरें होती हैं।

उत्पीड़न के अतिरिक्त विद्रोह का स्वर भी दलित समाज में दिखाई देता है। कुछ समय पूर्व ही गुजरात के ऊना में अपने उत्पीड़न के खिलाफ जिस स्तर पर दलित आंदोलन हुए, वह अप्रतिम था। हाल-फिलहाल एक विशेष कानून में संशोधन को लेकर दलित आंदोलन एक बहुत बड़े स्तर पर हुआ। वर्तमान समय में दलित समाज नेतृत्व विहीन भी नहीं है। उसमें योग्य नेता भी उपलब्ध हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि 'हरिजनगाथा' आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने रचनाकाल में थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation